INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

Peer Reviewed-Referred & Indexed Journal

April 2020 Special Issue -246

Corona Wariors, Our Real Super Heroes

Stay Home Stay Safe Stay Alive

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
M.S.G. Arts, Science & Commerce College, Malegaon Camp,
Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

26	Comparative Study of Computer Literacy of Students of Junior College	**Dr. Priya Kurkure**	120
27	Women Empowerment through Five Years Plan	**Dr. Vidya Jadhav**	125
28	A Study of Noise Pollutation Measurments in Ambad and Satpur Industrial Areas Beloning in Nashik City	**R. B. Bhise & S. V.Dhanwate**	131
29	Traffic and Noise Pollution Survey In and Around Pune City (2012)	**Dr. Pandurang Patil**	137
30	Election and Voting Behaviour in India	**Dr. Saroj Pandharbale**	143
31	Comparative Federalism and its General Principles	**Alka Patil**	146
32	India's Border Management : Role of Central Armed Forces	**Dr. P. A. Ghosh**	153
33	Synthesis and Characterization of In2o3 Thin Films by Spray Pyrolysis Technique for Gas Sensing	**N. B. Kothawade & S. V. Dhanwate**	162
34	Contribution of Agriculture Sector towards A $5 Trillion Indian Economy	**Dr. Rupali Deore**	171
35	Online Annual Refresher Programme (ARPIT) 2018; Online Course (ARPIT-Library and Information Science)	**Praful N. Kadu**	174
36	Synthesis and Characterization of Molybdenum Oxide (Moo3) Thin Films by Spray Pyrolysis Technique for Gas Sensing	**N.B. Kothawade & S.V. Dhanwate**	181
	हिंदी विभाग		
37	अचला शर्मा के रेडिओ नाटक	**डॉ. साधना भंडारी**	189
38	भारतीय मुस्लिम नारी के अनकहें सवाल	**डॉ. सुनील चव्हाण**	201
39	अनामिका की कविताओं में स्त्री	**डॉ. साईनाथ उमाटे**	207
40	मुक्तिबोध के काव्य का नई कविता पर प्रभाव	**डॉ. मिनल बर्वे**	212
41	रेणु के कथा साहित्य में ग्राम समस्याएँ	**डॉ. जियाउर रहमान जाफ़री**	216
42	अनुसूचित जनजाति : एक परीचय	**डॉ. किरण कुंभारे**	220
43	पंजाबी लोकगीतों में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन	**डॉ. गुरमोहिंदर सिंह**	228
44	आओ लौट चले उपन्यास में चित्रित गांधीवाद	**डॉ. कामिनी तिवारी**	235
45	हिंदी के विकास में खानदेश के कवियों का योगदान	**श्रीमती एच टी. पोटकुले**	243
46	हिंदी लघुकथा में चित्रित नैतिक मूल्य	**डॉ. शाहीन अब्दुल अज़ीज़ पटेल**	247
47	डॉ. नीरजा माधव के साहित्य में अस्तित्व के प्रति नारी चेतना : विशेष संदर्भ 'यमदीप', 'मेषे जम्पा' और तेभ्यः स्वधा'	**पद्मानंद सोनकाम्बले, डॉ. बी. डी. वाघमारे**	250
48	'जंगल का दाह' कहानी में चित्रित आदिवासी विमर्श	**डॉ. संजय दवंगे**	254
	मराठी विभाग		
49	आदिवासी साहित्यातील प्रतिमासृष्टी	**डॉ. माहेश्वरी गावित**	259
50	द्वैती तत्त्वज्ञानाचा उद्गाता - महानुभाव संप्रदाय	**डॉ. गणेश क. टाले**	266
51	आधुनिकता, आधुनिकतावाद आणि मर्ढेकर व पु. शि. रेगे यांची कविता	**डॉ. गोविंद काजरेकर**	272
52	संत एकनाथांच्या गौळणी व विराण्या	**डॉ. अंजली पांडे - जोशी**	279
53	संत जनाबाईच्या साहित्यातून विठ्ठलभक्तीचे दर्शन	**प्रा. सदाशिव शिंदे, डॉ. राजेंद्र ठाकरे**	284
54	शाहिरांच्या 'तमाशा' लोकरंग धारेतील 'गण' आणि 'गौळण'	**डॉ. राजेंद्र वाटाणे**	288
55	प्राचीन मराठीतील संत चरित्रकार : महिपतीबुवा ताहराबादकर	**डॉ. गोपाल ढोले**	294
56	समकालीन मराठी कविता	**डॉ. रमाकांत कराड, डॉ. संभाजी शिंदे**	298
57	१९७० नंतरचे मराठी नाटक	**प्रा. नितीन मोटे**	308

हिंदी के विकास में खानदेश के कवियों का योगदान

प्रा. श्रीमती पोटकुले एच.टी.
कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर गढी,ता.गेवराई,बीड
Email-potkuleh@gmail.com

हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में अहिंदी भाषियों की भूमिका उल्लेखनीय है। विशेषतः अहिंदी प्रातों में महाराष्ट्र का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। महाराष्ट्र राज्य प्रमुख पांच विभागों में विभाजित है। इन पांच विभागों में से खानदेश (उत्तर महाराष्ट्र)के नाम से जाना जाता है। हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर आज तक के विकास क्रम में इस क्षेत्र का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। महत्वपूर्ण इस दृष्टी से है की जो हिंदी भाषी क्षेत्र है,उनकी मातृभाषा हिंदी होने के कारण वहॉ हिंदी में लेखन किया जाता है,उसे हिंदी साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानना हि चाहिए। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिंदी साहित्य के विकास में हिंदी भाषी क्षेत्रों ने योगदान दिया है उतना ही महत्वपूर्ण योगदान अहिंदी भाषी क्षेत्रों ने दिया है। खानदेश की मुख्य भाषा मराठी, बोली अहिराणी होने के कारण हिंदी में किए गए सृजन की अपनी सीमाएँ जरुर हो सकती हैं फिर भी उन सीमाओं के बावजूद इस योगदान को स्वीकार करना चाहिए।

खानदेश महाराष्ट्र का एक महत्वपूर्ण प्रदेश है। जिसकी अपनी महान परम्परा है। इस प्रदेश में जलगॉव, धलियॉ एवं नंदुरबार जिले का समावेश हुआ है। यहॉ की संत परम्परा का योगदान महत्वपूर्ण है। भाषा की दृष्टि से भी यहॉ विविधता परिलक्षित होती है। हिंदी के विकास में खानदेश ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

खानदेश के गद्य–साहित्य लेखन में विविधता दिखाई देती है। यहॉ के अहिंदी भाषी लेखकों ने प्रमुखतः कहानी,निबंध,व्यंग आदि विधाओं के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है। गद्य–साहित्य की तरह खानदेश की अहिंदी भाषी डॉ.रु.गो.चौधरी, रमेशकुमार लाहोटी, डॉ.दंगल झाल्टे,डॉ.भारती आदी अनेक हिंदी साहित्यकारों ने हिंदी काव्य के विकास में अपना योंगदान दिया है। इस आलेख के माध्यम से डॉ.रु.गो.चौधरी और रमेशकुमार लाहोटी ने जो योगदान हिंदी साहित्य के लिए दिया है और इसका समाज के लिए कितना महत्व है इसे जानेंगे।

❖ डॉ.रु.गो.चौधरीः–

हिंदी साहित्य में काव्य के क्षेत्र में डॉ.रु.गो.चौधरी जी का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने रुपचंद नाम से कविताएँ लिखी है। डॉ.चौधरी जी का 'तुम और मैं' यह काव्यसंग्रह सन 1980 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में 50 कविताएँ संग्रहित है। कवि ने प्रेम–निरुपण की कविताएँ ज्यादातर लिखी है। कवि 'मैं और तुम' की भावना को मिटाकर एक हो जाने की बात करते है। प्रेम में एक–दूसरे के प्रति समर्पित हो जाना ही अपेक्षित होता है। अपनी इस प्रेम भावना को कवि एक चरम सीमा तक पहुँचा देता है। पाठक यह महसूस करता है की कवि अपनी प्रेमिका में ही ईश्वरीय साक्षात्कार कर रहा है। समाज में व्याप्त विकृतियों का चित्रण कवि ने मार्मिकता से किया है। संस्कृति की विडम्बनाओं का चित्रण कविने 'विपरित' नामक कविता में अत्यंत सुंदरता से किया है। कवि अपने मन का जो क्रंदन है,आक्रोश है उसे योगीजी को संबोधित कर पूछता है– ''यह कैसी विपरीति है, योगी जी?

आपने बोयी थी संस्कृति
और उग आयी विकृति

प्रकृति हुम बाहर से लाये है
जो यहॉ बदनाम हो गयी है।1

कवि कहते है की,वर्तमान युग में लोग आदर्श, अपनापना, निस्वार्थवृत्ति, सहानुभूति, त्याग आदि बाते भूल रहे है। प्रस्थपित व्यवस्था धीरे–धीरे अमानवीयता की और बढ रही है। इस व्यवस्था में उन्हें ही महत्वपुर्ण स्थान है,जिनके पास सत्ता है,संपत्ती है,अधिकार है। पर जो आम है उन्हें ठुकराया जा रहा है। वे तो केवल शोषण के विषय हैं। भले ही आज हम आधुनिकता का नारा लगा रहे हैं लेकिन समाज अलग–अलग वर्ग,संप्रदाय तथा वर्गों में विभाजित हो रहा है और यह आज की वास्तविकता है। समाज में व्याप्त स्वार्थीवृत्ति, भ्रष्टाचार, असत प्रवृत्तियॉ, भीषणता, अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि बातों से कवि विचलित होते है और ईश्वर से शिकायत करते हुए 'व्यर्थता–बोध' कविता में पूछते हैं–

''यह लंबी आयु क्यों दी भगवान?
अगर यह सब व्यर्थ ही है।
उतनी देते जितनी सार्थक होती थी
तो यह व्यर्थता–बोध न होता।''2.

आधुनिक काल में विवाह–संस्था चरमरा गई है। पारिवारिक और सामाजिक संबंध टूटने लगे हैं पति–पत्नी, मॉ–बाप, भाई–बहन आदि पवित्र संबधों में कडवाहट आ गई है। दूर से अच्छे और सुंदर दिखाई देने वाले अंदर से खोखले बने हुए हैं। रुपचंद जी के 'तुम और मैं' इस कविता संग्रह की 'डोली' यह कविता महत्वपूर्ण कविताओं में से एक है। इस कविता में कवि पाणिग्रहण हेतु चली व्याकुल संस्कृति का चित्रण अत्यंत मार्मिकता से करते है। समाज में दिखाई देने वाले दृश्यों को देखकर कवि कहते है–

''यह डोली है या आरथी है?
कहार में दुविधा नहीं है।
यह लाश है चेतना की
क्योंकि विवाह मरण ही तो है;
कालद्वारा संस्कृति का पाणिग्रहण
सबसे बडा मजाल ळें
यह पाखंड का बलात्कार है,
पुरुषत्व का दूराचार है,
षंढत्व की तानाशाही में
विवाह एक व्यभिचार है।''3

'तुम और मैं' इस कविता संग्रह की कविताऍ और कवि के संबंध में डॉ. हरिवंशराय बच्चन लिखते है; ''डॉ. चौधरी की भाषा मराठी है। वे अंग्रेजी और मराठी में भी कविता लिखते रहे हैं। हिंदी के प्रति उनका विशेष अनुराग है और उन्होंने हिंदी का विधिवत उच्चतम अध्ययन किया है ।... मैं कह सकता हूँ काव्याभिव्यक्ति पर उन्हें पूर्ण अधिकार है। उनके भावों में एक बडी मनोज्ञ सूक्ष्मता है और भाषा में इतनी सुबोधता है की वह साधारण पढे–लिखे लोगों के लिए सहज सुलभ होगी।''4

प्रेमनिरुपण के साथ ही कवि ने समाज में व्याप्त विकृतियॉ, भ्रष्टाचार, शोषण,अन्याय, अत्याचार आदि विविध विषयों को स्पर्श करके मार्मिक चित्रण किया है।

❖ रमेशकुमार लाहोटी:– रमेशकुमार लाहोटीजी का खानदेश के साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान है। लाहोटीजी कां गीत और गझल लिखने में दिलचस्पी है। उन्होनें 'गंगा के दो लाल' 'मजार'और

'अपनी अदालत' नाम फिल्मों के लिए भी गीत लिखे है। उनका 'बिन ब्याही दुल्हन' नामक संग्रह सन 1991 में प्रकाशित हुआ है। जिसमें 50 गीत–गझले संग्रहित है। कवि ने इस संग्रह के गीतों एवं गझलों में प्रमुखता प्रेम–भावना का निरुपण किया है। प्रेम मन की कोमल एवं पवित्र भावना है। कवि कहते है कि' जब प्यार किया तो डरना क्या'। प्रेम में डर के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। समाज से डर के किसी का भी प्रेम सफल नहीं होता। जमाने के डर से अपने प्रेम की पूजा समाप्त नहीं करना चाहिए। इसे कवि नें अपने गीत–गझलों में अभिव्यक्त किया है। और यही प्रेम का मंदीर तो त्याग की नींव पर ही खडा हो सकता है। इसिलिए कवि बिन ब्याही दुल्हन में कहते है–

''डर–डर के जो होती है,मोहब्बत नहीं होती,
दब–दब के जो होती है,इबादत नहीं होती!
माशूक के लिए चॉद–सितारे वो क्या लायें
माशुक के लिए जिनसे बगावत नहीं होती''5

कवि ने 'प्रेम' इस अढाई अक्षरों को समझ लिया है। भौतिक संपन्नता के इस युग में समाज में सच्ची प्रेम की कमी दिखाई देती है। कवि प्रियतमा से प्रेरणा लेकर कविता,गीत,गझल का सृजन करता है। किन्तू प्रियतमा ही मुॅह फेर लेती है,प्रेमी निराश होकर अपना लेखन कार्य छोड देता है। कुछ ऐसी ही स्थिति में कवि गुजरता है। इस स्थिति से हताश होकर कवि लिखते है–

'' औरों पर लिखने से बेहत्तर ना लिखना ही पसंद है।
तुम्ही से लिखना शुरु किया था,तुम्ही पे लिखना बंद किया है।
जब तक थे तुम मेरे अपने,शेरों से बहलाया तुमको,
तुमने सुनना छोड दिया है,हमने कहना बंद किया है।''6

साठोत्तरी युग में अनास्था और निराशा फैली हुई थी। इस युग में मोहभंग, अवसरवादिता, स्वार्थी राजनीति, आतंकवाद, बेकारी, दरिद्रता, आर्थिक विषमता, भाई–भतिजावाद, साम्प्रदायिकता आदि निराशाजनक परिस्थिति चारो तरफ फैली हुई थी। ऐसी परिस्थितियों में आम आदमी पूरी तरह से निराश हताश हो गया था। इन परिस्थितियों से उभरने के लिए कवि मनुष्य को आशावादी बनाते है क्योंकि मनुष्य जीवन में आशा के सहारे जीता है, मुसीबतों को सहता रहता है । किसी की प्रेरणा मनुष्य को आशावादी बनाती है। कवि कहते है की मनुष्य जीवन में सुख और दुख दोनों भी शाश्वत है। सफल मनुष्य वही है जो दुख तथा कठिण परिस्थिति में भी घबराता नहीं।

भारतीय समाज अनेक वर्ग संप्रदायों में बॅटा हुआ है। चार वर्णों में विभाजित इस समाज में व्यवस्था में उच्च वर्गीयों ने निम्नवर्गीयों पर अन्याय,अत्याचार किए है। कवि वर्ग संप्रदाय की इन विचारों को गिराकर शोषणमुक्त समाज निर्माण करना चाहता है।

भारतीय समाज उनके वर्ग सम्प्रदायों में बॅटा हुआ है। आज संसार में धर्म के नाम पर युध्द होते है,जो धर्म, शांति और प्रेम का संदेश देते हैं उसे भूलकर लोग धर्मांधता की आड में खून बहा रहा है। सबका मालिक एक है, जब एक ऐसी हवा, एक जैसा पाणी, मिटटी और सबका एक जैसा ही खून है तो कोई ऊच–नीच कैसे हो सकता है, इन कवियों ने समाज की वास्तविकता को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। समाज में व्याप्त रुढी, परंपरा, अंधविश्वास, आर्थिक, धार्मिक विषमता, भ्रष्टाचार का विरोध किया है साथ ही प्रेम की भी सशक्त अभिव्यक्ति भी की है। हिंदी साहित्य के विकास में खानदेश जैसे अहिंदी भाषा क्षेत्रों के कवियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ सुची:–

1. रूपचंद– तुम और मैं–पृ. 8
2. रूपचंद– तुम और मैं–पृ. 80
3. रूपचंद– तुम और मैं–पृ. 13
4. रूपचंद– तुम और मैं–पृ. 3
5. रमेशकुमार लाहोटी– बिन ब्याही दुल्हन,पृ.18
6. रमेशकुमार लाहोटी– बिन ब्याही दुल्हन,पृ. 80
7. मधु खराटे–हिंदी काव्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन